शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में खेल की भूमिका

अक्षय कुमार
सिद्ध गोपाल टीचर ट्रेनिंग कॉलेज,
कानपुर शिवराजपुर, उत्तर प्रदेश

सारांश – खेल वह क्रिया है, जिसमें आनंद, स्वतंत्रता एवं आत्म–प्रेरणा तीनों गुण मिलते हों। सभी बच्चों को अन्वेषण के लिए हँसने व आनंद उठाने के लिए समय, जगह, अवसर और अकेले या दोस्तों के साथ खेलना जरूरी है। इसलिए खेल को प्रोत्साहित करना आवश्यक है, जिससे सभी बच्चों के विकास, शिक्षा और कल्याण में सहयोग कर सकते हैं। खेल के माध्यम से बच्चों के शारीरिक कौशल को विकसित करने एवं स्वस्थ रहने में सहायता मिलती है। खेल बच्चों को ज्ञान बढ़ाने में, निर्णय लेने में एवं मानसिक कौशल विकसित करने में सहायता करता है। खेल में माध्यम से बच्चों में भाषा व संचार कौशल को विकसित करने में सहायता मिलती है। खेल बच्चों में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है।

खेल के माध्यम से मिलने वाली चुनौती बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। खेल–खेल में शिक्षा बोझरहित व मनोरंजक होती है। इससे बच्चों मे आत्मविश्वास पैदा होता है और बच्चे स्वप्रेरित होते हैं। बच्चों के लिए खेल प्राकृतिक, सहज, आनंददायक एवं लाभप्रद होता है।

खेल के द्वारा बच्चों को प्रभावी ढंग से शिक्षा दी जा सकती है। बच्चे खेल–खेल में काफी कुछ सीख लेते हैं। खेल के द्वारा बच्चे की मांसपेशियों का व्यायाम होता है, मस्तिष्क का विकास होता है और वह अन्य बच्चों के साथ रहना सीखता है। बच्चे खेल के माध्यम से आपसी बातचीत, तालमेल, अपनी बारी का इंतजार और धैर्य आदि का विकास होता है।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा कार्यक्रमों का उद्देश्य है कि बच्चे खेलकूद के माध्यम से खुद करके सीखें। इस पद्धति में बच्चे की आवश्यकताओं, रूचियों, क्षमताओं और सामाजिक संदर्भों को सम्मिलित किया जाता है।

बच्चों के संपूर्ण विकास (क्रिया, विधि, खोज, चिंतन, अवधारणा तथा अन्वेषण) के लिए खेलों की आधारभूत सुविधाएँ अनिवार्य रूप से उपलब्ध होनी चाहिए। सभी बच्चों के लिए गुणात्मक शाला–पूर्व शिक्षा का प्रावधान सुनिश्चित करना चाहिए, जिसके फलस्वरूप बच्चों का सर्वांगीण विकास हो। शाला–पूर्व शिक्षा का उद्देश्य विभिन्न आयामों के तहत बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल–खेल में जानकारी प्रदान करना है।

बच्चे के सीखने की प्रक्रिया व मानसिक क्षमताएँ

बच्चों को सिखाने में परिवेश मुख्य भूमिका निभाता है। जन्म से छः वर्ष तक इसकी प्रभावशीलता और भी अधिक होती है। परिवेश से अभिप्राय उन भौतिक, सामाजिक, प्राकृतिक परिस्थितियों से है जो बच्चों के आस–पास उपलब्ध है। जहाँ बालक पलता बढ़ता है, उसी परिवेश का अनुकरण कर सीखता है। सीखना बच्चे और उसके सामाजिक सांस्कृतिक एवं भौतिक वातावरण के बीच पारस्परिक क्रिया के परिणामस्वरूप होता है।

तीन से छः आयु वर्ग के बच्चों के लिए कार्यक्रम और योजना बनाने की विधियाँ

बच्चों को खेल–खेल में सिखाने के लिए आमतौर पर दो तरह की कार्य योजना बनाई जाती है– विषय आधारित और विकास क्षेत्र आधारित।

- विषय आधारित (थीम बेस्ड) कार्य योजना बनाते समय किसी एक ही विषय पर आधारित गतिविधियों को केंद्रित कर एक निश्चित अवधि के लिए कार्य योजना बनाई जाती है। इसके पीछे अवधारणा यह है कि किसी बात को समझने के लिए दिमाग को बार–बार दोहराव की आवश्यकता होती है। यह दोहराव अलग–अलग तरीके से किए जाने से बच्चों को बोरियत नहीं होती तथा विषय की समझ अच्छे से विकसित हो जाती है।
- विकास क्षेत्र आधारित कार्य योजना बनाते समय शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषाई विकास, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास के लिए अलग–अलग कार्य योजना बनाई जाती है।

सीखने के लिए सुरक्षित, सृजनात्मक एवं उपयुक्त वातावरण का निर्माण

कक्ष का भौतिक वातावरण और सजावट बच्चों को सीखने के लिए सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता है। छोटी आयु में बच्चे प्रत्यक्ष वस्तुओं से सीधे संबंध से आसानी से सीखते हैं। बच्चे बड़ों को अनुकरण कर वस्तुओं के साथ फेरबदल कर, छान–बीन कर, प्रयोग कर ज्ञान हासिल करते हैं।

आंतरिक (भीतरी) वातावरण– भीतरी वातावरण छोटे बच्चों की रूचियों व विकासात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

बाहरी वातावरण– बच्चों की मांसपेशियों के विकास के लिए मुख्य रूप से खेलकूद, भाग–दौड़ उछलना, चढ़ना–उतरना आदि शारीरिक गतिविधियाँ महत्वपूर्ण होती हैं। इसके लिए खुली जगह की आवश्यकता होती है। इसलिए ई.सी.सी.ई. केंन्द्रों पर बाहर का स्थान खुला होना अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक दिन में एक विशेष समय अंतराल बाहरी खेलों व गतिविधियों के लिए निर्धारित किया जाना चाहिए।

बच्चों के लिए खेलों के प्रकार

स्वतंत्र खेल– इसमें बच्चे बिना किसी विशेष निर्देश के अपने आप खेलते हैं। बच्चों को बाह्य खेलों में स्वतंत्र रूप से खेलने का पर्याप्त अवसर मिलना आवश्यक है, जिससे वे एक दूसरे से वार्तालाप व दोस्त बन सकें।

मुक्त व संरचनात्मक खेल– जब बच्चा मिट्टी के साथ किसी वयस्क के हस्तक्षेप और निर्देशन के बिना ही खेल रहा हो, तब इसे मुक्त खेल कहते हैं। मुक्त खेल जिज्ञासा एवं पहल को बनाए रखता है और बच्चों को खोज करने के लिए प्रोत्साहित करता है। संरचनात्मक खेल में पालनकर्ता बच्चे का ध्यान कुछ विशेष पहलुओं की ओर आकर्षित करता है। इस प्रकार संरचनात्मक खेल विशेष लक्ष्य की प्राप्ति में मदद करता है।

परीक्षणात्मक खेल– दन खेलों में, जैसे कि इनके नाम से स्पष्ट है, बच्चे चीजों को उलटते–पलटते व तोड़ते–फोड़ते देखे जाते हैं। इस तरह वे वस्तुओं का परीक्षण करते हैं।

विधानक खेल– वस्तुओं से खेलना, बच्चा रचनात्मक खेल खेलता है और कुछ नया बनाता है।

बौद्धिक खेल – इन खेलों में, बच्चे शब्द निर्माण व पहेलियाँ हल करते हैं।

निर्देशित खेल– इसमें बच्चों को कुछ निर्देशों के अनुसार खेलने को कहा जाता है यानि कि विशेष निर्देश के साथ खेलना।

क्रियात्मक खेल– इसमें बच्चे ज्ञानेंद्रियों तथा मांसपेशियों का प्रयोग कर वस्तुओं को खोजते हुए प्रयोग करके सीखते हैं। इससे कहाँ–कैसे की जिज्ञासा शांत होती है। क्रियात्मक खेल बच्चों को सक्रिय रहने और खोजबीन करने के अवसर प्रदान करते हैं।

रचनात्मक खेल– इसमें बच्चे विभिन्न वस्तुओं का उपयोग कर सीखते हैं, योजनात्मक ढंग से वस्तुओं को एक साथ रखते हैं, लक्ष्यों को पाने के लिए रणनीतियाँ बनाते हैं।

सृजनात्मक खेल– इसमें कल्पना–सोच एवं निर्णय के साथ सामग्री का प्रयोग करते हुए कुछ नयी खेल की रचना करना।

नियमबद्ध खेल– सामूहिक खेल बच्चों को अपने व्यवहार को नियंत्रित करना, नियमों को पालन, अपनी बारी का इंतजार करना, पूर्व निर्धारित नियमों का पालन सिखाते हैं। इन खेलों का उद्देश्य खेल में प्रतिस्पर्धा का भाव या हार जीत न होकर आनंद की प्राप्ति है।

गतिशील खेल– इन खेलों में बच्चे दौड़ना, छुपना, उछलना, कूदना आदि विभिन्न अंगों से गति के साथ खेलते हैं।

वैयक्तिक एवं सामूहिक खेल– जब बच्चे स्वयं और अकेले खेलते हैं तो यह वैयक्तिक खेल कहलाता है। जब वह दो या दो से अधिक बच्चों के साथ खेलते हैं तो वह सामूहिक खेल कहलाता है। समूह में खेलने के लिए आवश्यक है कि बच्चे दूसरों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखें और खेल के नियमों का पालन करें।

संपूर्ण बाल विकास की रूपरेखा

बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, भाषाई कौशलों, बौद्धिक, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, सौंदर्यानुभूति एवं खेल गतिविधियों के विकास से प्रारंभिक बाल्यावस्था में शिक्षा का गुणात्मक उन्नयन हो पाएगा। खेल बच्चों बच्चों के विकास के लिए मूलभूत आवश्यकता है। बच्चे खेल–खेल में काफी कुछ सीख लेते हैं। इसके तहत खेल–खेल में प्राणियों की चालों का चलकर और भारी या हलकी आवाज को निकालकर भिन्न–भिन्न प्रकार की क्रियाएँ बच्चों से कराएँ। खेल बच्चे की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और उसे जीवन की भावी महत्वपूर्ण क्रियाओं के लिए तैयार करते हैं। इस तरह आने वाले समय में बच्चों में निश्चित ही आत्मविश्वास का संचार होगा और वह भावनात्मक, नियंत्रण व संतुलन कायम कर सकेंगे।

संक्षेप में, मानव शिशु इस धरती पर सबसे तीव्र गति से सीखने वाला प्राणी है। बच्चे के जीवन के आरंभिक वर्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इसी अवधि में गतिशीलता, संवेदना, संज्ञानात्मक, भाषाई, सामाजिक और व्यक्तित्व के विकास की नींव रखी जाती है। शाला–पूर्व शिक्षा में बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण और चहुँमुखी विकास को ही बुनियादी तौर पर लक्ष्य माना जाता है। इस तरह बच्चों को स्वस्थ व सकारात्मक माहौल में खेल–खेल में सिखाया–पढ़ाया जा सकता है। शाला–पूर्व (प्रारंभिक बाल्यावस्था) शिक्षा बच्चों के विकास के लिए है, इसलिए उन्हें केन्द्र में रखकर खेलों के माध्यम से आधारभूत पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और ज्ञान की पूर्ति करनी चाहिए।

खेल–खेल में शाला–पूर्व शिक्षा की गतिविधियाँ

बड़े समूह की गतिविधियाँ– गीत, कविता, कहानी, नाटक, वार्तालाप, समूह खेल, त्यौहार, जन्मदिन, महत्वपूर्ण दिवस।

स्वतंत्र खेल– बच्चे स्वेच्छा से जो खेलना चाहें, खेल सकते हैं।

छोटे समूह की गतिविधियाँ– पहचानना, मिलाना, छाँटना, वर्गीकरण (बाँटना), क्रम से लगाना, नाटक, बागवानी, बिल्डिंग ब्लॉक्स से खेलना।

भाषा व साक्षरता पूर्व कौशल– कहानी, कविता, संवाद, अनौपचारिक बातचीत, किताबें, पहेलियाँ, लिखो और बोलो आदि।

रचनात्मक गतिविधियाँ– संगीत लय और ताल के साथ नृत्य, नाटक, कोलाज कार्य, मिट्टी के खिलौने, जानवरों और बगीचे की देखभाल आदि।

बाहरी खेल– दौड़ना, संतुलन बनाना, कूदना, रस्सी पर चलना, तैरना, पौधारोपण, बागवानी, साईक्लिंग, प्राकृतिक भ्रमण, क्षेत्रिय भ्रमण।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- एन.सी.टी.ई. 2009, नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन– टुवर्डस प्रिपेयरिंग प्रोफेशनल एंड ह्यूमन टीचर– 2009, नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन, नयी दिल्ली।
- रंगनाथन, एन. 2000, दी प्राइमरी स्कूल चाइल्ड– डिवेलपमेंट एंड एजुकेशन, ओरियंट लॉगमैन, नयी दिल्ली।
- स्वामीनाथन, एम. 1987, बच्चों के लिए खेल क्रियाएँ, यूनिसेफ, नयी दिल्ली।